Dr Priti Ranjan
Assistant Professor
Deptt of History
H.D Jain College

B.A Part - I

Topic - Aitihasik Manav.

प्रागैतिहासिक मानव

• भारतीय पुरापाषाण काल को मानव द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले पत्थर के औजारों के स्वरूप तथा जलवायु में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर तीन अवस्थाओं में बांटा जाता है :-

(I) आरम्भिक या निम्न पुरापाषाण युग (5 लाख से 50,000 ईसा पूर्व)

(II) मध्य पुरापाषाण काल (50 हजार से 40 हजार ईसा पूर्व)

(III) उच्च पुरापाषाण काल (40 हजार से 10 हजार ईसा पूर्व तक)

⇒ निम्न पुरापाषाण युग ⇒ इस काल का अधिकांश भाग हिमयुग से गुजरा है। इस काल के महत्वपूर्ण उपकरण है – कुल्हाड़ी या हस्तकुठार (Hand Axe) खंडक (chopper) इस समय मानव गंगा-यमुना के मैदान और सिन्धु के कछारी मैदानों में नहीं बसा था। इस युग में क्रोड उपकरणों की प्रधानता थी। बाद में क्रोड उपकरणों की प्रधानता – धीरे-धीरे कम होती गयी एवं शल्क उपकरणों की प्रधानता बढ़ती गयी। यह तकनीकी विकास का द्योतक था।

निम्न पुरापाषाण कालीन स्थल भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग सभी क्षेत्रों में प्राप्त होते हैं, इसमें आसाम की घाटी भी सम्मिलित है। एक महत्वपूर्ण निम्न पुरापाषाण स्थल 'सोहन की घाटी' में मिलता है, यह सोहन संस्कृति के नाम से जाना जाता है। इस युग के महत्वपूर्ण स्थल है - सोहन की घाटी, बेलन घाटी, आदमगढ़, भीमबेटका नेवासा आदि। कई स्थल कश्मीर एवं थार मरुभूमि में भी प्राप्त हुए हैं, किन्तु पुरापाषाण युग के औजार कश्मीर

में ज्यादा नहीं मिले है, क्योंकि हिमानीयुग में कश्मीर में अत्यधिक ठंड पड़ती थी। उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर के पास बेलनघाटी तक महत्वपूर्ण निम्नपुरापाषाण स्थल था। इसी तरह राजस्थान के मरुभूमि क्षेत्र में डीडवाना, भोपाल के पास भीमबेटका, नर्मदा के पास नरसिंहपुर, महाराष्ट्र में प्रवरा नदी के पास नेवासा जो गोदावरी की एक शाखा के तट पर है।

इस काल के लोग क्वार्टजाइट पत्थरों का प्रयोग करते थे। ये लोग शिकारी और खाद्य संग्राहक की श्रेणी में आते हैं। इस काल में वे बड़े पशुओं को मारते थे।

(ii) मध्य पुरापाषाण काल → इस काल को 50,000 से 40,000 ई०पू० के मध्य रखा जाता है। इस काल की महत्वपूर्ण विशेषता थी - प्रयुक्त होने वाले कच्चे माल में परिवर्तन। निम्न पुरापाषाण काल में क्वार्टजाइट प्रमुख कच्चा माल था, जबकि मध्य पुरापाषाण काल में ~~फ्लिंट~~ फ्लिंट, चर्ट आदि का प्रयोग कच्चा माल के रूप में होता था। इस काल में क्रोड उपकरणों की प्रधानता लुप्त हो गई जबकि शल्क विनिर्माण का प्रचलन बढ़ गया। मध्य पाषाण काल के स्थल प्राय: सम्पूर्ण देश से संबद्ध है, हालांकि उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में उतने स्थल प्राप्त नहीं होते जितने प्रायद्वीपीय क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं। पंजाब में कच्चे माल का अभाव था।

* उच्च पुरापाषाण काल - 40,000 से 10,000 ई०पू०। इस काल में नमी कम हो गई। इस अवस्था का विस्तार हिमयुग की उस अंतिम अवस्था के साथ रहा जब जलवायु अपेक्षाकृत गर्म हो गयी। इस काल की विशेषताएँ हैं: -

1. इसमें उपकरण बनाने की मुख्य सामग्री लम्बे स्थूल प्रस्तर फलक थे।
2. उपकरणों में तक्षणी और खुरचनी उपकरणों की प्रधानता बढ़ती गयी।

मध्य पाषाण काल

उच्च पुरापाषाण काल का अंत लगभग 9000 ई०पू० के आस-पास हिमयुग के साथ ही हुआ अतः इस काल में जलवायु गर्म एवं शुष्क हो गई। पेड़-पौधों, जीव जंतुओं की स्थिति में भी परिवर्तन आ गया। एक दृष्टि से मध्यपाषाण काल पुरापाषाण काल और नवपाषाण काल के मध्य संक्रमण को रेखांकित करता है। इस काल में भी मनुष्य मुख्यतः शिकारी और खाद्य संग्राहक हो रहा परंतु शिकार करने के तकनीक में परिवर्तन आ गया। अब वह केवल बड़े जानवर अपितु छोटे-छोटे जानवरों का भी शिकार करने लगा। अब वह मछलियाँ पकड़ने लगा तथा पक्षियों का शिकार करने लगा। पशुपालन का प्रारंभिक साक्ष्य भी इसी काल में मिलता है। मध्य प्रदेश में आदमगढ़ और राजस्थान में बागोर पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। इसका समय लगभग 5000 ई०पू० हो सकता है। इस काल में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ — प्रक्षेपास्त्र तकनीक के विकास का प्रयास। यह निश्चित ही महान तकनीकी क्रांति थी। इस काल में सर्वप्रथम तीर कमान का विकास हुआ।

मध्यपाषाण काल के उपकरण छोटे-पत्थरों से बने हुए थे। ये सूक्ष्म उपकरण आकार में काफी छोटे हैं। इनकी लम्बाई 1 से 8 cm के मध्य है। ये इसी कारण माइक्रोलिथ के नाम से जाने जाते है। इस काल के महत्वपूर्ण उपकरण थे: ब्लेड, नुकीले ब्लेड, त्रिकोण, नवचंद्राकार आदि। इसके अलावा इस काल में पुरापाषाण काल के कुछ औजार जैसे तक्षणी एवं खुरचनी आदि भी प्राप्त हुआ है।

महत्वपू॰ महत्वपूर्ण स्थल (बस्तियाँ) मध्यपाषाण स्थल, राजस्थान, दक्षिणी उत्तर प्रदेश, मध्य व पूर्वी भारत में तथा दक्षिणी भारत में कृष्णा नदी से दक्षिण में पाये जाते है। 1970-77 के दौरान गंगा के मैदान में मध्यपाषाण कालीन संस्कृति से संबद्ध स्थल प्रकाश में आए हैं।

—